हज़रत इमाम सादिक़ और (अ0) आप का सियासी माहौल

जनाब अली हसनैन ''शेफ़्ता''

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की विलादत बासआदत 17 रबीअ्–उल–अव्वल को हुई। उस वक़्त अब्दुल मालिक बिन मरवान चौथे उमवी खलीफा की हुकूमत पूरे अुरूज पर थी। और हिशाम बिन इस्माअील उसकी तरफ़ से मदीने का गवर्नर था। यह हुकूमत जब्र व तशद्दुद और ज़ुल्म व तअद्दी में अपनी मिसाल आप थी। इसके गवर्नरों में मोहल्लब और हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फी जैसे ज़ालिम व सफ़्फ़ाक लोग शामिल थे। ख़ास कर हज्जाज वो ज़ालिम जिसने एक लाख बीस हज़ार इंसानों को जानवरों की तरह ज़िब्ह कराया और हज़ारों लोग उसके क़ैद खानों में थे। इन में औरतें भी थीं। यह ज़माना आले रसूल और इन हज़रात से अक़ीदत व मोहब्बत रखने वालों के लिये बहुत सख़्त था। और आले रसूल की तरफ मैलान रखना सब से बड़ा जुर्म शुमार होता था।

अब्दुल मालिक बिन मरवान, इक्कीस बरस से कुछ ज़ियादा हुकूमत कर के 14 शव्वाल सं0 86 हि0 को राहि–ए–मुल्के अदम हुवा और उसकी जगह उसका सबसे बड़ा बेटा पायः–ए–तख़्ते दमिश्क में ख़लीफः बना।

वलीद भी अपने बाप ही की तरह बहुत बड़ा ज़ालिम व जाबिर था। हज्जाज बिन यूसुफ सकफ़ी का ज़ुल्म व जौर उसके अहदे हुकूमत में भी जारी रहा। वलीद 15 जमादि उल आख़िर सन् 66 हि0 में हलाक हुवा।

हज़रत इमाम सादिक़ (अ0) की उम्र उस वक़्त तेरा बरस थी। आपने इतने दिनों अपने जदे अमजद इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) का ज़माना देखा। आप की शहादत बकौल तब्रसी (अ0र0) यौम शंबः 12 मोहर्रम को हुवी (ज़ियादा मुस्तनद तारीख़ 23 मोहर्रम है हमारी तौहीद)

वलीद के बाद उसका भाई सुलैमान बिन अबदु उल मालिक वलीद की मौत ही के दिन तख़्त हुकूमत पर क़ाबिज़ हुवा। यह शख़्स खाने का इन्तिहाई हरीस था। और बहुत खाता था। और इसी बिस्यार ख़ूरी में इसकी मौत हुई। इसकी हिर्स का यह हाल था कि जब उसके सामने भुने हुव मुर्गो के बड़े बड़े तबाक़ आते तो उनके ठंडे होने का इन्तिज़ार किये बग़ैर अपने निहायत क़ीमती रेशमी जुब्बों की आस्तीन से उठा–उठा के खाने लगता। चुनांचे अस्मई ने हारून अब्बासी के सामने जब उसकी कसरते अक़्ल व हिर्स का ज़िक्र किया तो उसने अस्मई के मालूमात की तारीफ़ की और तोशः खाने से उसके रौग़न आलूद जुब्बे निकलवा के उसे दिखाये और जुब्बः उसे अता भी किया।

सुलैमान बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान जुमअः 10 सफर सं0 66 हि0 में कसरीन की एक तफ़्रीहगाह दाबिक में बिस्यार ख़ूरी के बाअिस हलाक हुवा। और उसकी वसीयत के मुताबिक उसके चचाज़ाद भाई अुमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को तख़्त नशीन किया गया। इनका सब से बड़ा कारनामा यह हुआ कि पूरी ममलकत में मिंबरों से अमीरुल मोमिनीन और आप की अवलादे अत्हार पर सब व शत्म का सिलसिला बन्द करा दिया। उन्होंने अपने आमिले मदीनः को यह भी लिखा कि ''अवलादे अली व फ़ातिमा पर दस हज़ार दीनार तक़्सीम करो कि अरसः–ए–दराज़ से तुम लोगों ने उनके हुकूक़ को रौंदा है'' अलावह बर्री मश्हूर है कि उन्होंने फ़िदक भी अवलादे जनाब फ़ातिमा (स0) की तरफ़ वापस किया था।

अुमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हुकूमत सिर्फ़ दो साल पांच माह और पांच दिन तक रही

और 23 रजब सं0 101 हि0 बरोज़ जुमअः दौरे समआन के मुकाम पर जो हम्स के मुज़ाफ़ात में था उनकी वफ़ात हो गयी। उसी दिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक की वसीयत के मोताबिक उसका भाई यज़ीद बिन अब्दुल मलिक तख़्ते हुकूमत पर क़ाबिज़ हुआ।

इस वक़्त हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) अुनफ़वाने शबाब के दौर में थे और आप के पिदरे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ0) की इमाममते हक्कः का अह्द था।

नये ख़लीफः यज़ीद बिन अब्दुल मलिक पर शराब व शबाब का गलबा था। पहले वह सलामः नामी लौंडी पर यूं फरेफ़्तः रहा कि उमूरे सलतनत की कुछ खबर ही न रही। फिर उसकी दादी उम्मे सईद अुस्मानीया ने उसे एक और ख़ूब सूरत लौंडी की तरफ माएल किया ताकि वह सलामः के इश्क से नजात हासिल करके उमूरे सलतनत की तरफ तवज्जुह करे मगर वह इस लौंडी हबाबः के इश्क में ऐसा मुब्तला हुवा कि उसी के ग़म में ख़ुद भी हलाक हो गया। इब्ने तकतका ने अपनी तारीख़ "अल–फ़ख़्री" में लिखा है कि वह हबाबः के मुंह में अंगूर के दाने फेंक रहा था कि एक दाना उसके हलक में फंस गया और वह मर गई। खलीफ़ा ने कई दिन उसकी लाश सामनेरखी और प्यार करता रहा। यहां तक के लाश सड़ने लगी तो कहीं ले जा के दफ्न कर दिया और फिर उसके ग़म में चन्द दिनों बाद ख़ुद भी मर गया। यह शाबान 105 हि0 की 25 तारीख़ थी।

यज़ीद इब्ने अब्दुल मलिक के बाद उसके मरने ही के दिन उसका भाई हिशाम उमवी ख़िलाफ़त के तख़्त पर बैठा। यह निहायत दुरूश्त ख़ू, बख़ील और ज़ालिम था। इसने तक़्रीबन साढ़े उन्नीस साल हुकूमत की । 6 रबीउल आख़िर 135 हि0 को राही–ए–दारे आख़िरत हुआ। इसी हिशाम ने जनाब ज़ैद (इब्ने इमाम ज़ैन–उल–आबिदीन अ0) को क़त्ल कराया। और उनकी लाश कब्र से निकलवा के सूली पर चढ़ाये रखी। यह सं0 121 या 122 हि0 का वाकिआ है।

हज़रत ज़ैद इब्ने अली इब्ने हुसैन, अपने पिदरे बुज़ुर्गवार की अवलाद में हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) के बाद बेहतरीन इंसान थे। वह अपने भाई इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) और अपने भतीजे इमाम जाफरे सादिक़ की इमामत के क़ायल थे। हिशाम ने अपने दरबार में बुला के उनकी तौहीन की थी। और वह बनी उमय्या के मज़ालिम से निहायत दिल बरदाशतः थे इसलिये आपने कूफ़े में हिशाम की हुकूमत के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था। मगर अह्ले कूफ़ः की अक्सरीयत ने गद्दारी की और जनाब ज़ैद शहीद हो गये।

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) को इसी हिशाम ने 114 हि0 में ज़हर दिलवाकर शहीद किया। आप की शहादत माह ज़िलहिज्जः या बकौले माह रबीउल अव्वल 114 हि0 में वाकिअ् हुई और आप की शहादत के बाद आप के जलीलुल क़द्र फ़रज़न्द इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की इमामत का ज़माना शुरूअ् हुवा।

हिशाम बिन अब्दु–उल–मालिक बिन मरवान बनी उम्मय्या का वह आखिरी बादशाह था जिस की हुकूमत को इस्तिहकाम हासिल रहा। हिशाम बिन अब्दुल मलिक को हुकूमत मिली। यह निहायत फ़ासिक व फ़ाजिर और बेग़ैरती से शराब भी पीने वाला था। वह खुल्लम खुल्ला मोहर्रमात–ए–शरईय्यः पर अमल करता था। यहां तक कि कुरआने मजीद पर तीर बरसाये थे। बिल आखिर बनी उम्मया ही ने उसे कत्ल कर दिया। उस ने सिर्फ़ साढ़े चौदा महीने हुकूमत की। उस के बाद जिल हिज्ज 126 हि0 में यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुल मलिक की बैअत की गयी। जिसने पांच माह हुकूमत की और हलाक हो गया।

यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुल मलिक के मुख्तसर तरीन दौरे हुकूमत के बाद उस का भाई ख़लीफ़ा बना मगर दो या चार माह बाद

उसे माज़ूल कर दिया गया। बनी उम्मया के दौरे हुकूमत के अजीब अय्याम थे जिन में उन का रोबे हुकूमत भी जाता रहा था।

यहां यह बात तारीख़ी हैसियत से याद रखने के क़ाबिल है कि फ़िर्क़ः–ए–मोअतज़लः उस ज़माने में पूरे तौर से ज़ाहिर हो चुका था और यज़ीद बिन वलीद मज्कूर इसी फ़िरक़–ए–मोतजिला के लोगों की मदद से इस काबिल हुआ था कि उसने अपने पेशरव वलीद बिन यज़ीद को उसकी हद से ज़ियादा बे हयाइयों की वजह से क़त्ल किया और खुद ख़लीफ़ा बन गया।

इब्राहीम बिन यज़ीद की हुकूमत को अभी दो चार माह हुवे थे कि मलिक बिन मोहम्मद बिन आख़िरी ख़लीफ़ः–ए–बनू उम्मया ने उस के ख़िलाफ़ लशकर कशी की। वह दमिश्क से भाग गये मगर मरवान ने उसे गिरफ्तार करवा के क़त्ल कर दिया। यह 126 हि0 का वाकिआ है। मरवान बिन मोहम्मद जिस को हिमार (गदहा) कहा जाता है 132 हि0 की इब्तिदा तक हुकूमत करता रहा। फिर इसी साल की 12 रबीउल अव्वल जुमअे के दिन कूफ़े में अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह की बैयत की गयी और सलतनते अब्बासिया का आग़ाज़ हुवा।

बनी अब्बास ने लोगों को अपनी तरफ़ बुलाया तो आले रसूल पर बनी उम्मया के हाथों ज़ुर्रियते रसूल पर जो मज़ालिम ढ़ाए गये थे बिल–खुसूस वाक़िअ़ः–ए–करबला और हज़रत ज़ैद की शहादत वग़ैरह के ज़रीअे ही लागों को बनी उम्मया से मुतनफ़्फ़िर किया गया था। लेकिन बनी अब्बास ने अन्दर ही अन्दर ऐसी साज़िश की जिसके नतीजे में ज़ुर्रीयते रसूल के बजाए वह खुद बरसरे इक्तिदार आ गये।

इमाम जाफ़रे सादिक ने सफ़्फ़ाह के बाद उस के भाई मंसूर अब्बासी और दूसरे अब्बासी हुकूमरां का ज़माना देखा। और इसी ने हज़रत को ज़हर से शहीद कराया।

यहां इस वाक़िअे का ज़िक्र दिलचसपी से ख़ाली नहीं है कि अबू सलमा ख़ल्लाल जो कूफ़े में अब्बासियों की तहरीक का दाओी था और इक्तिदार के बाद इन का पहला वज़ीर भी बना और उन्हीं के हाथों क़त्ल भी हुवा, इस ने जब यह देखा कि सफ़्फ़ाह मंसूर के बड़े भाई इब्राहीम को जिन्हें इमाम भी कहा जाता था, बनी उम्मया ने क़त्ल भी कर दिया है तो उस ने एक ही मज़मून के दो ख़त हुकूमत संभालने के बारे में लिख कर मोहम्मद बिन अब्दु र्रहमान बिन अस्लम खादिमे रसूलुल्लाह के हाथों निहायत राज़दारी के साथ मदीने भेजे। क़ासिद को हिदायत की कि वह पहले इमाम जाफ़र सादिक (अ0) के पास जाये अगर आप उस की पेशकश कुबूल कर लें तो दूसरा ख़त फ़ाड़ डाले। लेकिन अगर इमाम कुबूल न फ़र्मायें तो दूसरा ख़त लेकर वह अब्दुल्लाह बिन हसन के पास जाये। अबु सलमा इस तरह हुकूमत को बनी अब्बास से निकाल कर आले अबू तालिब की तरफ़ लाना चाहता था उस ने क़ासिद को हिदायत कर रखी थी कि इन दोनों साहिबान में से कोई भी अगर हुकूमत का तलबगार हो तो वह जल्द से जल्द उस के पास वापस पहुंचे।

यह क़ासिद रात की तनहाई में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से मिला और कहा ''मैं अबू सलमा का ख़त लेकर आया हूं'' इमाम ने फर्माया ''अबू सलमा से मेरा कया वासिता ? वह हमारे शीओं में नहीं है'' ''आप ख़त मुलाहज़ा कर के जवाब तो दे दें'' क़ासिद ने अर्ज़ की। इमाम ने चराग़ मंगवाया और ख़त लेकर चराग पर रख दिया यहां तक कि वह राख हो गया फिर क़ासिद से फ़र्माया ''बस यही इस का जवाब है।''

तब क़ासिद अबू सलमा की हिदायत के मोताबिक अब्दुल्लाह बिन हसन से मिलां उन्होंने दावत कुबूल कर के क़ासिद को रवाना कर दिया। सुब्ह के वक़्त वह इमाम (अ0) के पास आये और खुश हो के सारा वाक़िअ़ः सुनाया।

(बाक़ी पेज न0 16 पर..........................)

करो और पन्थ के परिक्षेत्र से बाहर हो जाओ और अगर पसन्द है और सचमुच तुम मुसलमान बनना चाहते हो तो सच्चे मन से उसे ग्रहण करो। इस्लाम के एक अंश या कुछ अंशों को नहीं बल्कि पूरे इस्लाम को लो। सीधी तरह आज्ञाकारिता का चलन इख़्तियार करो और इस्लाम को अपना दीन मान लेने के बाद फिर स्वतन्त्रता का दवा मत करो। इस्लाम आपकी इस आज़ादी को आपका हक़ नहीं मानता।

हम औरतों से निवेदन करते हैं कि वह अपने व्यक्तित्व को मर्दों के व्यक्तित्व में गुम न कर दें। अपने दीन को मर्दों के हवाले न करें वह मर्दों का दुमछल्ला नहीं हैं। उनकी अपनी एक अलग और अटल हस्ती है। औरतों को भी मर्दों ही की तरह खुदा के सामने पेश होना है। अपने किये धरे का स्वतः हिसाब देना है। क़यामत के दिन प्रत्येक औरत अपनी ही कब्र से उठेगी। अपने बाप, पति, भाई (बेटे) की कब्र से नहीं उठेगी। अपने कार्यों का हिसाब देते समय वह यह कहकर न छूटेगी कि मेरा धर्म मेरे मर्दों से पूछों। अपनी जीवन पद्धति की वह खुद ज़िम्मेदार है और उसे खुदा के सामने इस बात का जवाब देना है कि वह जिस रास्ते पर चल रही है क्या सोच कर चलती है। अतः हम औरतों का सवाल मर्दों के सामने नहीं स्वतः औरतों के सामने प्रस्तुत करते हैं और उनसे कहते हैं कि अपने जीवन मार्ग का फ़ैसला तुम खुद करो और इस बात की परवा किये बग़ैर करो कि तुम्हारे मर्दों का फ़ैसला क्या है ? इस्लाम तुम्हें अपने दीन की हैसीयत से पसन्द है या नहीं ? उसके सिद्धान्त, उसकी हदें, उसकी लगाई पाबन्दियाँ, उसके द्वारा डाली गयी ज़िम्मेदारियँ, मतलब यह कि सभी चीज़ें देख के निर्णय करो कि वह तुम्हें मान्य हैं या नहीं। अगर इन सब चीज़ों के साथ इस्लाम कुबूल है तो सच्चे मन से उसका अनुसरण करो, अधूरे ढंग से नहीं। पूरे इस्लाम को अपना दीन बनाओ और जान बूझकर उससे विमुख न हो।

यह बात एक मुद्दत से हम कह रहे हैं। अगर आपको हमारे लिटरेचर की कुछ जानकारी हो तो आप भी इस बात को जानती होंगी कि हमने हमेशा अपने साथियों और सहयोगियों से यही कहा है कि आप घर की औरतों मांओं, बहनों, बीवियों, बेटियों में इस्लाम का प्रचार अवश्य करें मगर ख़ुदा के लिये उन्हें अधिकार (क़व्वामीयत) के ज़ोर से अपने पथ की ओर न खींचें। उन्हें सोचने की, राय बनाने की पूरी आज़ादी दें। तब्लीग़ और आवाहन का हक़ बस इतना ही है कि आप इस्लाम के मुतालबे उनके सामने रखें, इसके बाद औरतों को इस बात का फ़ैसला खुद करने की आज़ादी होनी चाहिये कि उन्हें यह मांग स्वीकार है या नहीं।

□□□

(बक़िया पेज न0 7 का.....................)

इमाम ने फ़र्माया "आप ग़लत समझ रहे हैं न अबू सलमा आप का शीआ है न अबू मुसिल्म खुरासानी और उस के लशकर वाले आप के शीआ हैं "अब्दुल्लाह ने कहा "नहीं यह लोग मेरे बेटे मोहम्मद को हाकिम बनाना चाहते हैं।" जो इस उम्मत का मंहदी है इमाम (अ0) ने जवाब दिया कि " न आप का बेटा मंहदी–ए–मौऊद है न उसे हुकूमत मिलेगी बलकि अगर आप के बेटे ने तलवार उठायी तो वह क़त्ल कर दिया जायेगा।" अगरचे अब्दुल्लाह इमाम (अ0) से सिन में भी छोटे थे और इमाम उन का लिहाज़ भी करते थे मगर उन्हें यह बात सख़्त नागवार गुज़री और वह नाराज़ होकर पलट गये। इमाम ने उन्हें यह भी बता दिया कि अबू सलमा का क़ासिद पहले इमाम ही के पास आया था।

जब अबू सलमा का क़ासिद अब्दुल्लाह बिन हसन का जवाब लेकर कूफ़े पहुंचा तो वहाँ अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह की बैअत हो चुकी थी।

□□□